डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा-चकिया।

B.A. Part – II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper – IV

Date:-07-02-2023

अजातशत्रु का देशकाल और वातावरण

नाटक में वास्तविक सजीवता और गरिमा लाने के लिए अनुकूल वातावरण भी अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है। देशकाल की परिस्थितियों, परम्पराओं और जीवन-पद्धतियों की दिग्दर्शिका वेषभूषा आदि का जितना अच्छा चित्रण नाटक में होगा उतनी ही सजीवता एवं प्रभावोत्पादकता उसमें आ सकेगी।

'अजातशत्रु' नाटक में प्रसाद ने बौद्धकालीन राजनीति, सामाजिक और धार्मिक परिस्थितियों का उत्कृष्ट चित्रण किया है। आलोच्य नाटक की सम्पूर्ण कथावस्तु का संबंध राजकुल से है, अतः प्रसाद जी ने राजघरानों में चलने वाले षडयंत्रों बड़ा ही सजीव वातावरण प्रस्तुत किया है। इस षडयंत्र में मगध वंश की छोटी रानी छलना, कौशांबी वंश में उदयन की रानी श्यामा, कौशल वंश में राजा प्रसेनजित की रानी शक्तिमती और देवदत्त का गौतम के प्रति षडयंत्र सम्मिलित है, जो उस समय के राजनीतिक वातावरण को प्रस्तुत करता है।

नाटक में कौशल वंश, मगध वंश, और कौशांबी वंश की

20-25 वर्ष की घटनाओं का चित्रांकन है। निष्कर्षतः देशकाल अभिव्यक्ति की दृष्टि से 'अजातशत्रु' बौद्धकालीन राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थिति को स्पष्ट करने में पूर्णतः सफल है।